खेती में जल की महत्ता

होशियार सिंह

प्रायः देखने को मिलता है कि फसल पैदा करने के लिए किसान को अपना पूरा जीवन लगा देना पड़ता है और किसान का जीवन मिट्टी से ही आता है और मिट्टी में ही चला जाता है। किसान का परिवार भी अपने मुखिया की आशाओं पर खरा उतरने के लिए दिन-रात उसकी सहायता करता है। जब पूरा ही परिवार मिलकर काम करता है और इन्द्र देव प्रसन्न रहते हैं तो उसकी सारी चिंताएं दूर हो जाती हैं। जब किसान अपनी फसल पैदावार घर लाता है तो प्रायः यह कहता देखा जा सकता है कि इन्द्र देव ने उनकी सुन ली है।

धरती का लाल किसान अपने पेट को पालने के लिए दिन-रात एक करके फसल पैदा करता है और उस फसल पैदावार से न केवल अपना अपितु अपने परिवार व आम जन का पेट भरता है। किसान अपनी फसल पैदावार के लिए न केवल जल के कई स्रोतों पर निर्भर करता है अपितु वर्षा भी उनमें से एक होती है। यूं कहा जाए कि किसानों की खुशहाली का स्रोत ही वर्षा है तो बुरा नहीं होगा।

किसान को अपनी फसल पैदावार लेने के लिए दिन-रात खेत में जूझना पड़ता है और कई बार तो पर्याप्त जल स्रोत के अभाव में उसे अपनी फसल को बर्बाद होते देखना पड़ता है। कई बार तो जल का अन्य कोई विकल्प नहीं बचता और एकमात्र वर्षा ही उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति करती है। हरियाणा और राजस्थान का कुछ भाग तो पूर्णरूप से वर्षा पर आश्रित है और वर्षा के सहारे ही फसल पैदा करता है। जब कभी अच्छी वर्षा होती है तो फसल पैदावार भी अच्छी हो जाती है और अल्प मात्रा में हुई बारिश किसान को रुलाकर गुजरती है। ऐसे में वर्षा किसानों की फसलों का ही आधार नहीं अपितु जीवन का भी एक आधार है।

किसान अपने खेत में प्रमुख रूप से दो प्रकार की फसलें लेता हैं जिनमें एक रबी की फसल कहलाती है तो दूसरी खरीफ की। रबी की फसल सर्दियों में बोई जाती है और गर्मियों के आने से पहले ही काट ली जाती है वहीं खरीफ की फसल गर्मियों में बोई जाती है और सर्दी आने से पूर्व ही काट ली जाती है। दोनों ही फसलें वर्षा पर आश्रित हैं। किसान वर्षा का बड़ी बेसब्री से इंतजार करता है क्योंकि वर्षा ही उसकी खुशहाली का स्रोत होती है। वैसे भी भूमिगत जल की मात्रा घटती ही जा रही है और नहरों आदि में पानी नहीं आता है ऐसे में बेचारा किसान परेशान नजर आता है और दिन-रात इन्द्र देव से विनती करता है कि उसकी फसल को बचा ले। यूं कहा जाए कि किसान असहाय और वर्षा का पराधीन होता है तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। यही कारण है कि किसी वर्ष वर्षा अधिक हुई तो उसकी रोजी रोटी बच निकली वरना उसकी रोजी रोटी तक छिन गई। ऐसे में वर्षा होना किसान के लिए नया जीवन एंव खुशहाली का स्रोत बन जाता है वहीं वर्षा न होना अभिशाप का रूप ले लेता है।

देश में गर्मियों का मानसून अति अहमियत रखता है। जून-जुलाई माह में

अच्छी वर्षा किसानों की समस्त पूंजी है

खेती में जल...

भूजल के अत्यधिक दोहन से पानी का स्तर गिर रहा है

जब भूमि की तपन बढ़ जाती है और तपन के बाद मानसून चलकर आता है तो किसान की खुशी का कोई ठिकाना नहीं रहता है। जब वर्षा आती है तो किसान अपने खेतों में फसल उगाने की तैयारी में लग जाता है। यह भी सत्य है कि किसान को अपनी फसल उगाने से पहले कई अन्य क्रियाकलापों से गुजरना पड़ता है जिनमें खेत की तैयारी करना, खाद देना और पैदावार को बढ़ाने के लिए खेत में मेहनत करके अधिक से अधिक अन्न पैदा करना। वर्षा भी किसान की इच्छाओं के अनुरूप नहीं होती है। कभी तो भारी मात्रा में वर्षा आ जाती है जो उसकी बोई हुई फसल को तबाह कर देती है तो कभी अल्प वर्षा से उसकी फसल सूख जाती है।

प्रायः देखने को मिलता है कि फसल पैदा करने के लिए किसान को अपना पूरा जीवन लगा देना पड़ता है और किसान का जीवन मिट्टी से ही आता है और मिट्टी में ही चला जाता है। किसान का परिवार भी अपने मुखिया की आशाओं पर खरा उतरने के लिए दिन-रात उसकी सहायता करता है। जब पूरा ही परिवार मिलकर काम करता है और इन्द्र देव प्रसन्न रहते हैं तो उसकी सारी चिंताएं दूर हो जाती हैं। जब किसान अपनी फसल पैदावार घर लाता है तो प्रायः यह कहता देखा जा सकता है कि इन्द्र देव ने उनकी सुन ली है।

जब कभी अच्छी वर्षा होती है तो किसान की खुशी का ठिकाना नहीं रहता है किंतु जब कभी वर्षा कम होती है तो बेचारे किसान की आंखों के आंसू नहीं सूख पाते हैं। किसान की समस्त पूंजी ही वर्षा है। यह भी कटु सत्य है कि जल जी जीवन है और जल ही किसान के प्राण होते हैं। जल नहीं तो जीव का जीवन एक सूखे पत्ते की भांति नीरस बनकर रह जाता है। यह भी देखने को मिलता है कि भारतीय किसान की हालात अच्छी नहीं है क्योंकि किसान को अपने गुजर बसर के लिए वर्षा का ही सहारा लेना पड़ता है जो समय पर नहीं होती है और किसान परेशान ही रहता है। आज किसान कृषि करने में कोई रुचि नहीं रखता है किंतु किसान की मजबूरी है कि वो असहाय होता है और उसकी सारी आशाएं वर्षा के नीचे दफन हो जाती हैं। वर्षा का आना ही उसके व उसके परिवार के लिए शुभ संकेत होता है। रेगिस्तानी क्षेत्रों में तो सदा ही वर्षा की कमी होती है और कुछ क्षेत्रों में तो वर्षा की बहुतायत होती है। दोनों ही प्रकार से किसान परेशान हैं। आंसू और मुस्कान वर्षा ही है।

दक्षिण हरियाणा के लिए तो वर्षा उनके जीवन मृत्यु का स्रोत है। इस क्षेत्र में वर्षा कम होती है और कई बार तो अल्प वर्षा होती है। किसान अपनी सारी फसलें वर्षा के सहारे लेता है। ऐसे में अगर वर्षा होती है तो प्राण बच जाते हैं वरना उसे जीवन मृत्यु के बीच ही जूझना पड़ता है। इस क्षेत्र में वर्ष 1996 के अलावा कभी भी अच्छी वर्षा नहीं हुई है। यही कारण है कि राजस्थान से सटे इस क्षेत्र के किसान अति परेशान हैं। उनकी खुशहाली में वर्षा ही एकमात्र स्रोत है।

घटता जल स्तर

कहावत है जल बिन सब सून अर्थात बिना जल के सब कुछ सूना लगता है। जल बहुत काम की वस्तु है और जल का इतना दोहन हो चुका है कि किसान एवं आम जन परेशान हो गया है। यूं तो जल का अंतिम स्रोत वर्षा है किंतु वर्षा भी दिनोंदिन कम होती जा रही है। यही कारण है कि दक्षिण हरियाणा में जल एक अहं समस्या बनकर रह गयी है। वर्षा के कम होने, नहरों में कम जल आने के चलते भूमि के जल में निरंतर कमी आती जा रही है। किसानों की कृषि का आधार जल कम होता जा रहा है। दक्षिण हरियाणा में तो यह एक बड़ी समस्या बनकर उभर रहा है।

लोगों का पेट भरने वाला और स्वयं ही भूखा रहने वाला किसान आज घटते जल स्तर के कारण एक ऐसे दोराहे पर खड़ा है कि उसके सामने कोई अन्य विकल्प ही नजर नहीं आ रहा है। किसान परेशान था और परेशान ही रहने के आसार बन गए हैं। किसान के पास दिनोंदिन भूमी तो कम होती ही जा रही है वहीं भूमि से लगातार पानी का दोहन करते रहने से जल का स्तर गिरता ही जा रहा है जो किसान के लिए एक नई समस्या बनकर उभर रही है। किसान के सामने जल का अगर कोई विकल्प है तो वह वर्षा का होना है किंतु वर्षा दिनोंदिन कम होती जा रही है। दक्षिण हरियाणा में हर वर्ष जल कुछ कम ही हो पाता है। किसान आकाश की ओर टकटकी लगाए देखा जा सकता है।

दक्षिण हरियाणा का क्षेत्र राजस्थान से सटा होने के कारण वहां रेतीली मिट्टी पाई जाती है। इस क्षेत्र की बार-बार सिंचाई करके ही फसल की पैदावार ली जा सकती है। फसल पैदावार लेने के लिए किसान को अपने खेत में पानी देने की जरूरत होती है। वैसे भी बारिश समय पर नहीं होती है और खेतों में जल की पूर्ति कर पाना सरल कार्य नहीं होता है। पानी की पूर्ति के लिए किसान को नहरों पर आश्रित रहना पड़ता है किंतु नहरों में कम समय के लिए पानी आता है जिसके कारण किसान के खेत सूखे रह जाते हैं और समुचित खेत सिंचाई कर पाना कठिन कार्य होता है। किसान के सामने खेत की सिंचाई करने के कुछ अन्य विकल्प भी हैं किंतु वे विकल्प न के बराबर होते हैं।

किसानों के सामने सबसे बड़ी समस्या जल स्तर में दिनोदिन हो रही गिरावट है। प्रति वर्ष जल स्तर गिर जाता है। किसान को डीप बोर करवानी होती है। उसका अधिकांश खर्चा इस बोर पर ही लग जाता है जिसके चलते उसकी सारी उन्नति रूक जाती है। दक्षिण हरियाणा में एक डीप बोर करवाने के लाखों रूपये खर्च हो जाते हैं। यदि किसान लाखों रूपये यूं ही खर्च कर देगा तो कृषि से आय कम होने से उसका गुजारा चल पाना भी कठिन हो जाएगा। पहले ही किसान भूखों मरने के कगार पर है और उस पर खर्च के बोझ से वह टूट जाएगा।

किसान वर्षा के जल को ही अपने खेतों की सिंचाई का प्रमुख स्रोत मानते हैं। वर्षा वर्ष में दो माह ही होती है बाकी वर्ष सूखा ही बीत जाता है।

जीवन के लिए जल महत्वपूर्ण होते हुए भी लोग उसका जमकर दुरुपयोग कर रहे हैं

गर्मियों की मानसूनी वर्षा ही किसान की खुशहाली का राज होती है। वर्षा पर नजर डाली जाए तो पता चलता है कि दक्षिण हरियाणा में वर्ष 1996 में अधिक वर्षा हुई थी वरना वर्षा हर बार कम रह जाती है। किसान ऐसे में अपने खेत की सिंचाई करने के लिए बोर वैल का उपयोग करता आ रहा है। बोर वैल का जल स्तर भी दिनोंदिन कम होता जा रहा है। इस बात को लेकर किसान चिंतित है। दक्षिण हरियाणा के कई क्षेत्र तो अत्यधिक दोहन के कारण डार्क जोन में परिवर्तित हो चुके हैं और वहां से पानी को निकालना प्रतिबंधित है।

दक्षिण हरियाणा में नहरों का जाल बिछा है और कुछ नहरों में जल जब आता है तो अधिकांश जल को सूखी जमीन ही सोख जाती है। यही कारण है कि किसान की भूमि पूर्ण रूप से जल से परिपूर्ण नहीं हो पाती है। किसान को ऐसे में अन्य साधनों का सहारा लेना पड़ता है। अन्य साधनों में जोहड़ों एवं तालाबों का जल आता है किंतु वे भी न के बराबर होते हैं। नदियों का जल भी उपलब्ध नहीं है। नदियां इस क्षेत्र से गुजरती ही नहीं हैं। कुछ बरसाती नदियां बहती थी वे भी अब वर्षा का जल कम होने के कारण अब बेकार पड़ी हैं। उनका अस्तित्व ही समाप्त होने के कगार पर पहुंच गया है।

ऐसे में किसान के सामने एकमात्र विकल्प वर्षा का जल ही बचता है। वर्षा का जल सबसे बेहतर तो माना जाता है किंतु या तो सर्दियों में बहुत कम वर्षा होती है या फिर गर्मियों के मौसम में कुछ वर्षा होती है। वर्षा का जल एक ओर किसान की भूमि का जल स्तर बढ़ाता है वहीं फसल के लिए भी बेहतर माना जाता है। वर्षा दिनोंदिन कम होती जा रही है जिसके चलते किसान का जीना ही दूभर हो गया है। किसान के सामने कृषि करने के अन्य स्रोत उपलब्ध ही नहीं हैं।

जल स्तर गिरते ही चले जाना किसान के लिए कई मायनों में समस्या बनती जा रही है। एक ओर जहां किसान को जल का स्तर गिर जाने से अपने नलकूपों की अधिक खुदाई करनी पड़ती है वहीं किसान को अधिक धन खर्च करना होता है। वैसे भी किसान गरीब है और उसका गुजर बसर नहीं हो पाता है उस पर उसका खर्चा बढ़ जाने से उसे अपने एवं अपना मन मसोस कर ही रहना पड़ता है।

किसानों के सामने सबसे बड़ी समस्या जल स्तर में दिनोदिन हो रही गिरावट है। प्रति वर्ष जल स्तर गिर जाता है। किसान को डीप बोर करवानी होती है। उसका अधिकांश खर्चा इस बोर पर ही लग जाता है जिसके चलते उसकी सारी उन्नति रूक जाती है। दक्षिण हरियाणा में एक डीप बोर करवाने के लाखों रूपये खर्च हो जाते हैं। यदि किसान लाखों रूपये यूं ही खर्च कर देगा तो कृषि से आय कम

होने से उसका गुजारा चल पाना भी कठिन हो जाएगा। पहले ही किसान भूखों मरने के कगार पर है और उस पर खर्च के बोझ से वह टूट जाएगा।

यदि वर्षा अधिक होती रहे तो जल का स्तर नहीं गिर पाएगा और किसान को अपने कुएं पर अधिक खर्च नहीं करना होगा। हर वर्ष भी तो अधिक वर्षा नहीं होती है। सूखे की भयंकर मार झेलता किसान अब परेशान हो चला है। जितना धन कमाता है उसका अधिक भाग तो डीप बोर पर खर्च कर देता है। किसान का परिवार बड़ी ही गरीबी से गुजर बसर करता है।

दक्षिण हरियाणा में तो जल की समस्या एक भयंकर रूप ले रही है। किसान जल बंटवारे की ओर टकटकी लगाए हुए है। वर्षों से नदियों का जल पाने की फिराक में है किंतु नदियों का जल विवाद न्यायालय तक पहुंच जाता है। ऐसे में किसानों को यह जल भी मिलता नजर नहीं आ रहा है।

कहावत है- जल बिना सब सून। सचमुच किसान के लिए जल की कमी उसकी समस्या को बढ़ा रही है। किसान कुछ भी कर पाने में असफल रहता है। किसान को बस सपने में भी जल दिखाई देता है किंतु जल उसे नसीब नहीं हो पा रहा है। किसान को अगर किसी प्रकार जल पर्याप्त मात्रा में मिल जाए तो किसान एक बार फिर से खुशहाल हो सकता है। किसान की खुशहाली में जल का ही योगदान है। ऐसे में किसान को जल की ओर ध्यान देने की जरूरत है। विभिन्न कारणों से वर्षा कम होने से समस्या बढ़ती ही जा रही है।

नासमझी है जल बहाना

जीवन का अमृत कहलाने वाला जल कहने को तो पृथ्वी का तीन चौथाई भाग ढका हुआ है किंतु पेयजल के रूप में एक फीसदी से भी कम है। पेयजल ही नहीं बहुउपयोगी एवं चमत्कारी तरल पदार्थ को कितने ही कामों में लिया जाता है। दिनोंदिन पेयजल की मांग बढ़ रही है, कृषि में पानी की मांग चली आ रही है वहीं जल को लेकर कई राज्यों के बीच आपसी मनमुटाव बढ़ रहा है। यह जल इतना महत्वपूर्ण होते हुए भी लोग जल से अनभिज्ञ हैं और इसका जमकर दुरूपयोग कर रहे हैं। परिणाम यह है कि आने वाले दिनों में जल की भयंकर समस्या उत्पन्न हो सकती है।

जहां जल है वहीं जीवन है और यूं कहा जाए कि जल बिना जीवन संभव नहीं है तो गलत नहीं होगा। यह जल दिनोंदिन कम होता जा रहा है। आज किसी गांव या शहर पर नजर डालें तो पता चलता है कि जल की विकट समस्या उनके सामने मुंह बाए खड़ी हुई है। एक तरफ पीने के लिए जल भी शहरी क्षेत्रों में नहरों से सप्लाई हो रहा है वहीं जल के लिए मारामारी आम है। आज के भौतिकवाद में जल के लिए युद्ध हो रहे हैं। जल की एक बोतल बीस रूपये तक बिक रही है। जिस देश में एक नहीं अपितु सात बड़ी नदियां और छोटी नदियां बहती हों वहां आज जल को बोतलों में भरकर बेचा जा रहा है। एक तरफ ग्रामीण क्षेत्रों में देखा जाए तो वहां जल का दोहन हो रहा है वहीं जल की बर्बादी चल रही है। जल का कपड़े धोने में तथा अन्य घरेलू कामों में दुरूपयोग हो रहा है।

शहरी क्षेत्रों की बजाए जल का दुरूपयोग ग्रामीण लोग अधिक कर रहे हैं। ग्रामीण लोग तो जल की कद्र तक नहीं जानते हैं और जल को बहाने में कसर नहीं छोड़ते हैं। ग्रामीणों के यहां नलों पर टोंटी तक नहीं होती है जिसके कारण जल व्यर्थ बहता रहता है। जोहड़ों में भारी मात्रा में जल भरा रहता है। आश्चर्यजनक बात यह है कि गर्मियों में भी जोहड़ जल से भरे रहते हैं और गलियों से निकलना भी कठिन होता है जो यह इंगित करता है कि ग्रामीण लोग जल को बेकार में बहाते रहते हैं। ग्रामीण लोग तो जल के किनारे ही मलमूत्र त्यागते हैं और जल का जितना दुरूपयोग हो सके करते हैं। कपड़े धोने में तथा घरेलू कार्यों में जमकर जल का दुरूपयोग करते हैं।

जल एक चक्र की भांति धरती पर घूमता रहता है। जब बादल बनते हैं तो धरती पर बारिश के रूप में पानी आ जाता है। यह देखने में आ रहा है कि वर्ष 1996 में कुछ अच्छी बारिश हुई थी वरना बारिश अच्छी न होने के कारण प्रत्येक वर्ष पृथ्वी का जल स्तर गिरता ही चला जा रहा है। कितने ही क्षेत्रों में डार्क जोन होने के कारण जल का अभाव चल रहा है। कुछ जगह जल तो है किंतु उन क्षेत्रों में लोगों का जमावड़ा होने के कारण जल की मांग बढ़ रही है। लेकिन एक प्रश्न हर इंसान के दिलोदिमाग में घर करता जा रहा है कि कितने दिनों तक धरती में जल और रहेगा। आखिरकार जल के बिना कैसे जीवन संभव होगा।

आज किसान वर्षा पर निर्भर न रहकर नलकूपो द्वारा खेतों में सिंचाई कर रहा है

जल जीवन होते हुए भी लोग जल के संरक्षण के लिए गंभीर नहीं हैं। कहते हैं कि ठोकर नहीं लगती तब तक इंसान नहीं संभलता। अब ठोकर भी लगने जा रही है। अगर इंसान ने जीवन का अस्तित्व बनाए रखना है तो धरती पर जल की अनवरत मात्रा बनाए रखनी होगी। इंसान अभी से ही चंद्रमा पर जाने की बात कर रहा है किंतु वहां जल का अभाव होने के कारण उसके जीवन को प्रश्नवाचक चिह्न लग जाता है। सरकार, आम जन और किसान अगर जल के मुद्दे को गंभीरता से लें तो आने वाले समय में कुछ वर्षों तक जल और मिल सकता है। रहीम ने भी तो यही कहा है- रहिमन जल राखिए, जल बिना सब सून। जल के बिना सब कुछ सूना है। आवश्यकता है जल के प्रति गंभीर रहने की।

जल को धरा पर बचाने के लिए आम जन को जल के प्रति सचेत करना चाहिए और जल की कमी के दुष्परिणामों की जानकारी देनी चाहिए। इस क्षेत्र में हीरो और खिलाड़ी अगर जल के संरक्षण के बारे में जानकारी दें तो हो सकता है कि जल के बारे में जन सोचने लग जाए। विद्यालयों में शिक्षकों द्वारा पुस्तकों में जल के पाठ लगाकर तथा जल की पुनरूपूर्ति के उपायों के बारे में जानकारी देकर ही जल को बचाया जा सकता है। जल तो सोने-चांदी और हीरों से भी मूल्यवान होता है। जल को खराब होने से बचाने के सार्थक उपाय करने चाहिए।

नलकूप

यूं तो किसान का नाम ही मेहनतकश इंसान है। अगर हरियाणा में किसी व्यक्ति के तन पर फटे कपड़े, पैरों में टूटे जूते और दाढ़ी बढ़ी हुई नजर आती है तो वह किसान है। दक्षिण हरियाणा का किसान तो अति मेहनती एवं दिन-रात खेतों में काम करने वाला होता है। किसान की खुशहाली में नलकूप का अहम योगदान माना गया है।

किसान की हालात अच्छी नहीं

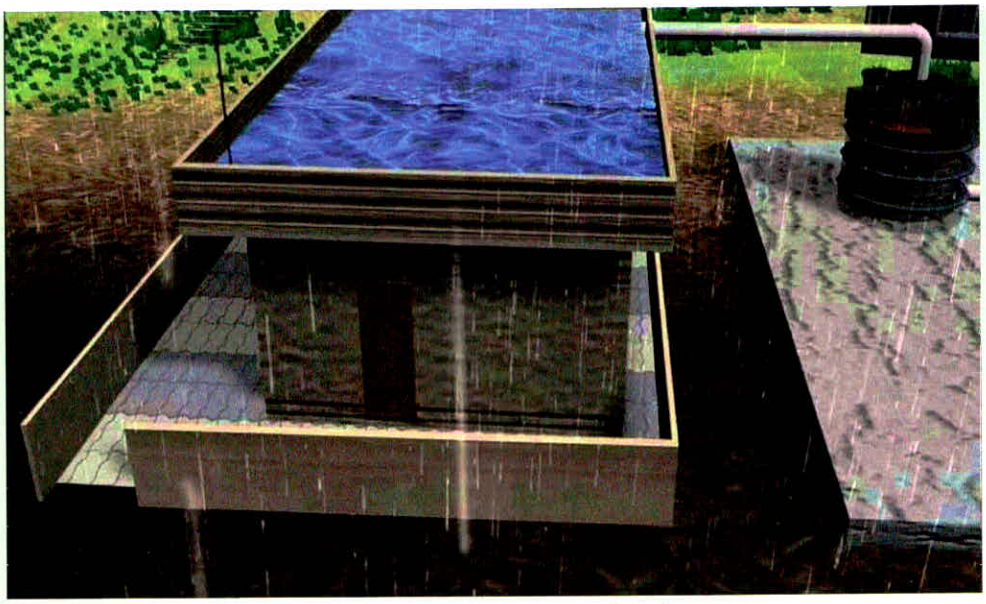

छतों का पानी एकत्रित कर सिंचाई का एक बेहतर विकल्प

होती है। पुराने समय में तो किसान की जो बद हालात होती थी उसमें सुधार हुआ है किंतु आधुनिक सुख सुविधाओं के चलते उसकी हालात में सुधार हुआ है। किसान जहां दिनभर खेतों में काम करते हुए धूल फांकता हुआ नजर आता है वहीं उसका परिवार भी खुश नहीं होता है। वर्ष में अधिक समय अपने परिवार से दूर रहने वाला अगर कोई है तो वह किसान ही है। उसे अपना पेट भरने के अलावा पूरे जगत का पेट पालना पड़ता है। किसान को सुबह और शाम का कुछ पता नहीं होता है। उसकी समृद्धि में अगर कोई सहायक है तो बस नलकूप है।

दक्षिण हरियाणा में दो प्रकार के किसान होते हैं। एक प्रकार के किसानों के पास तो अपना कोई खेत नहीं होता है और दूसरे के खेतों पर काम करके ही अपना गुजारा चलाता है और व्यवसाय भी कृषि ही है वहीं दूसरे वो किसान होते हैं जिनका अपना खेत होता है। जिनका अपना खेत होता है उनके लिए भी एक समस्या होती है कि वे अपने खेत पर कोई नलकूप बना पाए हैं या नहीं? जिन किसानों के खेतों में नलकूप नहीं हैं वे बहुत परेशान नजर आते हैं और उनकी हालात उन किसानों से ठीक होती है जिनके पास अपनी भूमि नहीं होती है। फिर वो किसान आते हैं जिनके अपने खेत भी हैं और नलकूप भी खुद के ही हैं। वे अपने खेतों में अपने ही नलकूपों की सहायता से कृषि करते हैं ये किसान कुछ समृद्ध भी हैं और कर गुजरने की क्षमता रखते हैं।

दक्षिण हरियाणा का महेंद्रगढ़ जिला तो राजस्थान के क्षेत्र से सटा हुआ है जहां पानी का अभाव होता है तथा जल भी भूमि में 150 फुट तक गहराई पर मिलता है। अब तो गहराई दिनोदिन बढ़ती ही जा रही है और किसान की समस्या भी बढ़ती ही जा रही है। इस क्षेत्र में किसान की एक ही तमन्ना होती है कि जैसे-तैसे एक कुआं खोदकर बिजली कनेक्शन लिया जाए। अगर किसान के पास कुआं है तो उसे कनेक्शन पाने में भी कई-कई माह लग जाते हैं। कनेक्शन पाने के बाद तो किसान की हालात में सुधार आ जाता है और अपने खेत पर कई प्रकार की फसलें ही नहीं अपितु सब्जी या फलदार पौधे उगाकर एक नया प्रयोग करता है।

एक जमाना था जब दक्षिण हरियाणा में कुओं की संख्या बहुत कम होती थी और किसान अपने कुओं का जल पशुओं की सहायता से खींचता था जिससे फसल उगाकर कड़ी मेहनत करनी पड़ती थी। बाद में कुछ सुधार हुआ और बिजली की मोटर लगाकर पानी को खींचने लग गया किंतु इस वक्त उसके पास आजकल वाले फव्वारा पाइप नहीं होते थे। धोरा और क्यारी नाम से खेत की सिंचाई करके ही अपनी रोटी रोजी का जुगाड़ करता था। किसान अति मेहनती होता था। बाद में जहां किसान के पास फव्वारा सिंचाई योजना का आरंभ हुआ और बैल एवं ऊंट के स्थान पर ट्रैक्टर का शुभारंभ हुआ है तभी से किसान आलसी होता चला गया है।

आज का किसान आलसी जरूर बन गया है किंतु उसकी खुशहाली में न केवल ट्रैक्टर अपितु नलकूप ने अहं भूमिका निभाई है। अगर किसान के पास दोनों सुविधाएं हैं तो वह किसान खुशहाल मिलेगा। यही कारण है कि प्रत्येक किसान चाहता है कि उसके खेत में कम से कम नलकूप हों ताकि वह अपने खेतों की सिंचाई के अलावा अन्य किसानों की खेती में सहायक सिद्ध हो सके।

आज के दिन 60 फीसदी किसानों के खेतों में नलकूप हैं और दस प्रतिशत किसानों के पास अपने ट्रैक्टर हैं। दो फीसदी ऐसे किसान हैं जिनकी अपनी जमीन नहीं होती है अपितु वे दूसरे की जमीन पर सिंचाई करके फसल उगाने का काम करते हैं। दिनोंदिन जहां भूमि से पानी घट रहा है और जल का स्तर गिरता ही जा रहा है वहीं किसान की नलकूप बनाने की मांग बढ़ रही है।

एक नलकूप बनाने में किसान को कम से कम एक लाख रूपये की जरूरत होती है और पचास हजार रूपये खर्च करके उसे कनेक्शन मिल पाता है। यही कारण है कि एक गरीब किसान द्वारा नलकूप बनाना सरल कार्य नहीं होता है। अगर किसान के पास अपना नलकूप है तो वह अन्य किसानों से समृद्ध होगा वरना अन्य किसानों की तुलना में पिछड़ता ही चला जाएगा। दक्षिण हरियाणा के किसान के पास जल का अन्य कोई स्रोत भी तो नहीं है। नहरें हैं तो उनमें जल नहीं आता है और अगर जल आता भी है तो किसान उस जल को नहीं ले सकता है। या तो किसान खरीफ फसल के लिए वर्षा पर आश्रित रहता है या फिर नलकूपों पर। यही कारण है कि प्रदेश और दूसरे देशों के किसानों के मुकाबले दक्षिण हरियाणा का किसान अधिक मेहनती एवं कम समृद्ध होता है।

कैसे बचाएं पानी

जल को बचाने के लिए कई उपाय अपनाएं जा रहे हैं। कई संस्थाएं काम कर रही हैं। जल को बचाने के लिए कुछ संस्थाएं निम्न हैं-

मोड़ी गांव-मोड़ी गांव में किसान गजराज सिंह द्वारा अपने क्षेत्र के सभी लोगों के घरों के जल को एक जगह स्टोर किया जाता है। विशेष पाइप लगाकर सभी घरों का पानी इकट्ठा किया जाता है। इस पानी को वाटर रिचार्ज के लिए या फिर फसल के लिए प्रयोग कर रहे हैं। उनके इस कार्य की हर जगह सराहना की जा रही है।

कनीना का स्कूल-हरियाणा के जिला महेंद्रगढ़ के कनीना के राजकीय स्कूल में समस्त छतों का जल इकट्ठा करके वाटर रिचार्ज के लिए एक गड्ढे में डाला जा रहा है। सरकारी स्कूल के इस कार्य की सराहना की जा रही है।

संपर्क करें:
मोहल्ला-मोदीका, वार्ड नंबर-01
कस्बा-कनीना-123 027
जिला-महेंद्रगढ़ (हरियाणा)
मो.न. 09416348400